





















# शांति की पहल को धक्का

आखिर वही हुआ जिसकी आर्शका काकी समय से व्यक्त की जा रही थी। ईरान को किसी भी हाल में परमाणु न बनाने देने की अपनी मुहिम के चलते इजरायल ने शुक्रवार की सुबह ईरान पर 200 फाइटर जेटों के साथ धावा बोल दिया। इस हमले में ईरान के सेना प्रमुख स्पेशल फॉर्स के चौक दो बड़े परमाणु वैज्ञानिक समेत पांच बड़े अफसर मार गए। हमले के बाद भी इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने वही अपनी पुरानी बात दोहराई और कहा कि ईरान परमाणु बम तैयार करने वाला था इस पर हमला किया गया।

इजरायली सेना ने यह भी दावा किया कि इरान के पास 15 परमाणु बम बनाने लायक यूरेनियम है। जाहिर है जिस तरह इरान के सेना प्रमुख वैज्ञानिक मारे गए, जाहिर है उसके निशाने पर न्यूक्लियर प्लाटर्स और बड़े मिटटी अफसरों के रेजिडेंशियल कॉम्प्लैक्स थे। इजरायल अपने इन हमलों को

बेहद सफल बता रहा है और दावा कर रहा है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम अब काफी पीछे धकेल दिया गया है। यूं तो ईरान ने भी पलटवार किया और सौ विस्फोटक ड्रोनों से इजरायल पर हमला बोला, लेकिन इजरायल का दावा है कि उसने अपने मजबूत डिफेंस के चलते इन हमलों को नाकाम कर दिया। जैसाकि हमने पहले ही कहा कि इन हमलों की पहले से ही आशंका थी, लेकिन हाल-फिलाल ऐसे नहीं लग रहा था, उसका कारण भी था, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ईरान के साथ चल रही न्यूक्लियर वारात को लेकर काफी आशानकृत दिखाई दे रहे थे। ऐसी भी खबरें आ रही थीं कि इजरायल तो ईरान पर हमला करने के लिए हर समय तैयार है लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति उसे ऐसा न करने के लिए मना कर रहे हैं। इसलिए ऐसा मानने के लिए अच्छे भले कारण है कि डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान को वार्ता की गफलत में डालकर इजरायल से हमला करवा दिया। थोड़ी सी नानुकूर के बाद अब तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्वीकार कर लिया कि इजरायल ने जो ईरान पर हमला किया है उसे उसकी पूरी तरह जानकारी थी। इतना ही नहीं उन्होंने ईरान को चेतावनी भरे अंदाज में कहा भी कि अगर वह कठोर कार्रवाई से बचना चाहता है, तो वह अपना परमाणु कार्यक्रम छोड़ने के लिए जितनी जल्दी तैयार हो जाए। वह उसके लिए बेहतर है। जहां तक बात ईरान की है, ईरान जरा भी पीछे हटने के संकेत नहीं दे रहा है और उसने साफ कर दिया है कि वह इजरायल के साथ युद्ध में अब किसी भी सीमा तक जाएगा और इजरायल पर हुए हमले का पूरी तात्कात से जवाब देगा। इस बीच इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू को पीएम मोरी से फोन पर बात भी की है। मोरी जी ने स्वयं अपने एक्स पर कहा है कि भारत ने ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते तनाव को लेकर चिंता व्यक्त की है और मतभेदों को वार्ता कर जरिये सुलझाने की सलाह दी है। अभी यह कहना मुश्किल है कि यहां से बिंगड़ी स्थिति किधर जाएगी, लेकिन इतना तो कहना ही पड़ेगा कि दिन-प्रतिदिन हालात अब बिंगड़े जा रहे हैं और कहीं से भी शांति की पहल होती दिखाई नहीं दे रही है अगर ईरान बड़ा हमला इजरायल पर करता है तो निश्चित रूप से स्थिति काफी भायाव हो सकती है।

## दोहरे मानदंडों का खतरनाक प्रदर्शन

जहां तक उन्हें पता है, ईरान ने इजरायल को हमला करने के लिए कार्रवाई उकसावे की कार्रवाई नहीं की है, इजरायल ने इसे पूर्ण प्रतिरोधी हमला बताते हुए एक देश के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया, यह दोहरे मानदंडों का थर्टरनक प्रदर्शन है, अगर वैश्विक शक्तियां इस पर चुप रहती हैं, तो वास्तव में यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा, इजरायल ने जो किया है, वह रूस द्वारा युक्तेन के सथ किए गए कार्यों के समान है, आप रूस के खिलाफ आवाज उठाते हैं, अभियान शुरू करते हैं, लेकिन जब इजरायल ईरान पर हमला करता है, तो अमेरिका, यूरोप और अन्य चुप रहते हैं, अगर एक देश का दूसरे पर हमला करना गलत है, तो ये तब भी गलत होना चाहिए, जब इजरायल ईरान पर हमला करता है।

-उमर अब्दल्ला, मख्यमंत्री, जप्प-कश्मीर

# ਮਾਂਦਿਆਂ ਮੈਂ ਪੈਸੇ ਲੋਕਾਂ ਵੀ ਆਈਪੀ ਦਰਜਨ ਬੰਦ ਹੋ

**ठ** कुर बांके बिहारी मंदिर में पैसे लेकर दर्शन करने वाले बांडसरों की गिरफतारी के बाद काशी विश्वनाथ धाम में सुगम दर्शन के नाम पर एक साथ 21 लोगों की गिरफतारी पर मंदिर अस्थान की व्यवस्था पर प्रभाव है वहाँ ईश्वर के दरबार में पांच फैला रहा है भ्रष्टाचार गहन चिन्ताजनक एवं शर्मनाक है

कुछ ही दिनों पहले ओंकारेश्वर स्थित ममलेश्वर मंदिर में भक्तों से वीआईपी दरशन के नाम पर अवैध वसूली करने पर प्रासादन ने एक होमगार्ड जवान औपर टो पट्टियों पर क्षतितार्ह की है।

देश-विदेश के भवत अग्राह श्रद्धा से अपने आराध्य-कादर्शन करने आते हैं, लेकिन देश के प्रमुख मन्दिरों में सीधे दर्शन कराने के नाम पर पैसों की लूटावाली मची है या वीआईपी संस्कृति के नाम पर त्रासद एवं भेदभावपूर्ण स्थितियां पसरी हैं। सवाल यह पूछा जा रहा है कि किंदुओं के धार्मिक स्थलों और आयोजनों में क्यों भक्तों के बीच भेदभाव होता है? मन्दिरों में गरीब एवं अमरी लोगों के बीच भेदभाव की स्थितियां खुला प्रचाराचार ही हैं। पैसे लेकर एवं वीआईपी दर्शन की अवधारणा भक्ति एवं अस्तासा के खिलाफ है। यह एक असमन्नता का उदारण है, जो कात्तिकार्तिक लूटावालों पर भी आधारत करती है। काशी विश्वनाथ मन्दिर में तो त्रिविष्णु सुरक्षा व्यवस्था भी है। मौद्रिक का चप्पा-चप्पा सीसीटीवी की मर्मों की पहुंच में है। यह मन्दिर सुरक्षा कारणों से अतिसंबंधित दरनशील स्थल होने के बावजूद ऐसा कृत्य खेदजनक ही नहीं, आपत्तिजनक भी है। मौद्रिक प्रबंधन को चाहिए कि दर्शन की प्रचलित व्यवस्था को और सुगम, प्रभाताचार व

A photograph showing a group of people, including men in white shirts and a woman in a pink sari, standing in front of a golden shrine. The shrine features a large statue of a saint, likely Sai Baba, dressed in a red and white robe, standing on a blue and gold decorated base. The background shows a highly ornate, gold-colored temple structure with intricate carvings and arched doorways.

दोषरहित बनाए ताकि व्यवस्था में कोई संघं न लगे और जन-आस्था आहत हो।

काशी विश्वनाथ मर्दिर में तो सुगम दर्शन का शुल्क भी जमा कराया जाता है परं ठांगों की जमात ने शीघ्र दर्शन के नाम पर कमाई का नया रास्ता ताताश लिया। मर्दिर प्रबंधन को चाहिए कि वह सुगम दर्शन व्यवस्था के नाम पर हो रही धृष्टिकों को गंभीरता से ले। फर्जी पंडा, गाइड बनकर लोगों को झांसे में लेने वाले लोग अचानक एक दिन में डेरा नहीं जमाए होंगे। यह सब काफी समय से लड़ रहा होगा। इस प्रकार की ठांगों करने से संभावना कैसे आ जाती है, इसकी जांच होनी चाहिए। बात केवल ठाकुर बांके बिहारी मर्दिर या काशी विश्वनाथ धाम की ही नहीं है, बल्कि देश के प्रमुख मर्दिरों में बहदृत जन-आस्था की भीड़, वे

# रक्त की हर बूंद में छिपी होती है किसी घर की गुट्टान



योगेश कुमार गोयल

महीनों में किसी बीमारी से बचने के लिए कोई वैक्सीन लगावाइ हो, आयु 18 से कम या 60 साल से ज्यादा हो तो रक्तदान न करें। जब भी रक्तदान करें, उससे कुछ समय पहले और कुछ समय बाद तक पर्याप्त पानी पीं, भोजन में स्ट्रिङ्यां तथा आयरन विटामिन से भरपूर पौष्टिक आहार लें तो लैंगिक रक्तदान से पहले कंज, फूट, अधिक वसायुक्त भोजन एवं अलावा धूप्रापण, मद्यपान इत्यादि किसी भी प्रकार के नशे का सेवन करने से बचें। शराब पीते हैं तो 2-3 दिन पहले शराब का सेवन बंद कर दें।

रूप से सफाई होती है और रक्त कुछ पतला हो जान से खून में थक्के नहीं जमते, जिससे हार्ट अटैक की संभावना बेहद कम हो जाती है। रक्तदान के बाद शरीर में जो नए ब्लड सेल्स बनते हैं, उनमें किसी भी बीमारी से लड़ने की अपेक्षाकृत अधिक ताकत होती है और यह स्वच्छ व ताजा रक्त शरीर से विपरीत तरफ बाहर निकलते हैं में मदरार होता है, जिससे न सिफ्ट कोलेस्ट्रॉल और रक्तचाप नियंत्रित रहता ही बल्कि केंसर जैसी बड़ी बीमारियों से बचाव, कुछ हद तक मोटापे पर नियंत्रण तथा कई संक्रामक बीमारियों से बचाव होता है। रक्त में आयरन की मात्रा नियंत्रित हो जान से लीवर की कार्यक्षमता बढ़ जाती है।

जीवनदाई रक्त की महत्ता के मद्देनजर लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से 14 जून 1868 को जन्मे कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिवस पर 14 जून 2004 को रक्तदान दिवस को शुरूआत की गई थी और तब पहली बार विश्व स्वास्थ्य संगठन, इंटरनेशनल फोर्डेशन ऑफ रेडक्रॉस तथा रेड क्रिस्टल सोसायटीज द्वारा 'रक्तदान दिवस' नाम दिया था, तभी से यह दिन 'रक्तदान' के नाम कर दिया गया। विश्व रक्तदान दिवस की शुरूआत का उद्देश्य यही था कि चैकिं दुनियाभर में लाखों लोग समय पर रक्त न मैल पाने के कारण मौत के मुहूर्में समा जाते हैं, अतः लोगों को रक्तदान करने के लिए जागरूक किया जाए। हमारे शरीर में शरीर के कुल बजन व करीब 7 फीटसदी रक्त होता है और यदि हम उसे से 3 फीटसदी भी दान कर दें तो भी स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं होती। वैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिर्शानुसार एक बार में किसी भव्यतक का एक यन्त्रित अधिकर 450 मिलीलीटर अधिक रक्त नहीं लिया जा सकता और यह कोई पूर्ण हमारा शरीर खुद ही 2-3 दिनों में ही बच लेता है। रक्तदान के बाद प्राप्त रक्त आवश्यकतानुसार लात रक्त कणिका प्लेटलेट्स, प्लाज्मा और क्रायोप्रेसिसिटेट अलग कर मरीजों के लिए उपयोग किए जाते हैं और आरायेसी का उपयोग रक्त लिए जाने के 42 दिन बाद तक किया जा सकता है जबकि प्लेटलेट्स के काल 5 दिन के अंदर उपयोग की जा सकती है। रक्तदान करते समय कुछ महत्वपूर्ण बदलाव घट्टान अवश्य रखा जाना चाहिए, तभी आप द्वारा किया गया रक्तदान सार्थक होगा। आपको एडवाइस मलरिया, हेपेटाइटिस, अनियंत्रित मुझमेह, किडनी संबंधी रोग, उच्च या निम्न रक्तचाप, टीवी डिप्परिया, ब्रॉकाइटिस, स्ट्राईक, एलजे पीलिया जैसी कोई बीमारी हो तो रक्तदान न करना महावारी के दौरान या गर्भवती अवश्य स्थनप्रबल कराने वाली महिलाएं रक्तदान करने से बचें। यह आपको टाइफाइड हुआ हो और ठीक हुए महीने भर ही हुआ हो, चंद दिनों पहले गर्भपात हुआ हो तो नासाल के भीतर मलरिया हुआ हो, पिछले छ

---

(Continued)

# ਨੀਮ ਕਰੈਲੀ ਕਾਵਾ ਕੋ ਅਪਿੰਤ ਫੰਡਲ ਕਾ ਮਹਤਵ

अफजल हुसैन फौजी

**३८** स्था व श्रद्धा का प्रतीक कैंची धाम इन दिनों  
श्रद्धालुओं की आस्था का बड़ा केंद्र है। जहां  
देश-विदेश से लायों भक्त नीम करौली बाबा  
के दर्शन को पहुंचते हैं। बाबा की अलौकिक  
उपर्युक्ति और चमत्कारों की कहानियों से  
जुड़ा यह स्थान भक्तों के लिए श्रद्धा और  
विश्वास का प्रतीक है। जनसामान्य के साथ  
फिल्मी जगत, राजनीति, खेल जगत से जुड़ी  
कई बड़ी हस्तियां कैंची धाम पहुंचकर बाबा  
के दर्शन कर चुकी हैं।

कैंची धाम में विशेष तौर पर नीम करौली बाबा को  
कम्बल चढ़ाने की परंपरा बहेद लोकप्रिय है। दूर दूर से  
श्रद्धालु कैंची धाम पहुंचकर बाबा को कंबल चढ़ाते हैं।  
इसका कारण है कि नीम करौली बाबा को कंबल  
अत्यन्त प्रिय थे और बाबा अपने शरीर में प्रभी थोटी और  
कंबल आदोते थे। बाबा गरीबों को भी कंबल कान करने  
और भोजन करवाने की सलाह देते थे, यही कारण है  
कि आज भी बाबा को श्रद्धा से भक्तों द्वारा कम्बल  
चढ़ाया जाता है।

**कम्बल के अनेक चमत्कार**  
 कैंची धाम टस्ट से जुड़े भुवन विष्ट बताते हैं कि  
 बाबा के चमत्कारों में भी कबल की भूमिका रही है। कई  
 बार बाबा ने इसी कंबल से चमत्कार दिखाए जिनका

A collage of three images. The top-left image is a portrait of Sri Sri Ravi Shankar, an elderly man with a beard and mustache, wearing a grey shawl over a dark shirt. The bottom-right image shows the exterior of a large, ornate Hindu temple with red and yellow domes and intricate carvings, identified as the ISKCON temple in Rishikesh. The central image shows a group of people gathered outside a white building with a red roof, possibly a guesthouse or temple entrance.

वर्णन उनकी जीवनी और किताबों में मिलता है, वहाँ बाबा को कंबल वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है। श्रद्धालु जब बाबा को कंबल चढ़ाते हैं, तो मंदिर में मौजूद पुजारी कम्बल को बाबा की मूर्ति से छुआकर उसे रोगों से मुक्ति मिल सकती है। यही कारण है कि भक्तों की आस्था इस कंबल से जुड़ी हुई है। बाबा के कम्बल को घर में पूजा वाली जगह यां फिर शुद्ध स्थान पर रखा जाता है।

प्रसाद के तरापर बाबा सद है। जिस श्रद्धालु अपने घर ले जाते हैं। इसे बाबा का प्रसाद और आशेवार्द माना जाता है। यह कंबल भक्त अपने घर के पूजा स्थान में रखते हैं या फिर किसी पवित्र स्थान पर सुरक्षित रखते हैं। कई श्रद्धालु अपनी मनकामना पूरी हानि पर भी बाबा को कंबल चढ़ाते हैं।

बीमारों का कम्बल से उपचार  
मान्यता है कि यदि घर में कोई बीमार व्यक्ति हो,  
और उसे पेरे श्रद्धा भाव से यह कम्बल ओढ़ाया जाए तो  
प्राप्त नहीं है इस प्रकार जोका कम्बल आज ना  
हजारों लोगों के लिए बाबा के प्रति आस्था का माध्यम  
बना हुआ है।

( ये लखक के निजा विचार हैं )

लक्ष्मी वार्ष

वीआईपी यात्रियों को विशेष सुविधाएं मिलती हैं, जबकि आम लोग लंबी कठारों में खड़े रहते हैं। वीआईपी संस्कृत एक नासूर बन गई है यही कारण है कि हर सरकार वीआईपी संस्कृति को खत्म करने का वादा करती है, लेकिन हकीकत में इसे बनाए रखने के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं। वीआईपी कल्चर एवं पैसे लेकर दर्शन कराने की धांधली ने एक बार फिर से नए सिर से बहस छेड़ दी है।

सवाल उठ रहा है कि जब गुरुद्वारा में वीआईपी दर्शन नहीं, मणिधर्द में वीआईपी नमाज नहीं, चर्च में वीआईपी प्रार्थना नहीं होती है तो सिर्फ हृदय-मणिदर्शन में क्षुग्र मुख्यलोगों के लिए वीआईपी या पैसे लेकर दर्शन क्या है? क्या इस पद्धति का खाल नहीं किया जाना चाहिए, जो हिंदुओं में दूर्योग पैदा करता है? प्रमिण्ड मणिदर्शन में वीआईपी पाप एवं दर्शन की व्यवस्था समाप्त क्यों नहीं होती? यह व्यवस्था समाप्त होना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनबड़े हो ही धार्मिक स्थलों पर होने वाली वीआईपी व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किए हैं। निश्चित ही जब किसी को वरीयता दी जाती है और प्राथमिकता दी जाती है तो उसे वीआईपी या वीआईपी कहते हैं। यह समाजनता की अवश्याणा को कमर आकरा है। वीआईपी संस्कृत एक पथप्रस्ताव है, यह एक अतिक्रमण है, यह मानवधिकारों का हनन है।

